कामनाओं के जाल को तोड़े

-युवाचार्य महाश्रमण

बीदासर 14 फरवरी 09-

आदमी के भीतर अनेक वृ□ायां काम करती है, लेकिन राग और द्वेष की वृ□ा जीवन को नरक की तरफ धकेल देती है। उक्त विचार युग प्रधान आचार्य महाप्रज्ञ के उ□ाराधिकारी शिष्य युवाचार्य महाश्रमण ने स्थानीय तेरापंथ भवन स्थित श्रीमद् मघवा समवसरण में धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहे। उन्होंने आगे कहा कि आमतौर पर जिस दिन आदमी समझदार होता है उस दिन से काम भोग के प्रति आकर्षण बढ़ता चला जाता है लेकिन जो अपने आप में संतुष्ट होता है स्थितप्रज्ञता उसका मित्र बन जाती है। असंतोष का कोई अंत नहीं होता। इच्छाएं आकाश की तरह अंतहीन होती है और इसी अच्छा की आग में आज सारी दुनियां जल रही है। इंसान की एक कामना पूरी होती है कि दूसरे ही क्षण मन के किसी कोने से दूसरी इच्छाएं अपने पैर पसारने लगती है जिसे पुरी करने की कोशिश में वह अपनी समुची जिन्दगी को झोंक देता है। कामनाओं के दो प्रकारों का उल्लेख करते हुए महातपस्वी महाश्रमण ने कहा-कामनाएं दो तरह की होती है-प्रशस्त और अप्रशस्त। प्रशस्त कामना एक अपेक्षा से अच्छी भी होती है लेकिन अप्रशस्त कामनाएं हमेशा समस्याओं को बढ़ाती है। एक आत्मा शाश्वत है कि दुनियां में संयोग-वियोग में बदल जाते हैं और रिश्ते छूट जाते है इसलिए मनुष्य को मोह विसर्जन की साधना का अभ्यास करते रहना चाहिए। युवाचार्य श्री का मानना था कि कामनाओं के डाल को तोड़ने के लिए जरूरी है अनित्य अनुप्रेक्षा का प्रतिदिन प्रयोग। क्योंकि जैसे-जैसे लाभ बढ़ता है वैसे वैसे लोभ की मात्रा बढ़ती चली जाती है ऐसी स्थिति में आत्मा की पवित्रता और मुक्ति की मंजिल का वरण किसी भी कीमत पर नहीं हो सकता।

समाधि केन्द्र दायित्व हस्तांतरित

फाल्गुन कृष्णा पंचमी को बीदासर समाधि केन्द्र में एक साल तक सेवा दे चुकी साध्वी कुंथूश्री व समाधि केन्द्र में इस वर्ष के लिए नियुक्त साध्वी नगीना ने आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित होने का सौभाग्य का सूचक बताया। वहीं साध्वी गवेषणा श्री आदि साध्वियों ने समूहगीत से समाधिकेन्द्र में आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में सेवा के शुभारम्भ के अवसर पर खुशियों का इजहार किया। साध्वी कुंथूश्री ने साध्वी नगीनाश्री को समाधि केन्द्र सेवा का दायित्व हस्तोतरित किया।

मुनि राकेशकुमार ने किया विहार

अणुव्रत प्रभारी मुनि राकेशकुमार एवं सहयोगी संत मुनि सुधाकर व मुनि दीपकुमार ने आचार्य महाप्रज्ञ से आशीर्वाद लेकर शनिवार को गंगाशहर की तरफ विहार किया।

नोट :- उपरोक्त समाचार की फोटो ई-मेल द्वारा प्रेषित की जा चुकी है।

प्रेक्षा से होता है शरीर शोधन

प्रेक्षाध्यान का एक प्रयोग है शरीर प्रेक्षा। शरीर में रहे हुए दोष-विजातीय त□वों का निरशन शरीर-प्रेक्षा के प्रयोग से होता है। शरीर केवल व्याधि-मंदिर ही नहीं है अपितु चेतना का निर्मल पिण्ड है। शरीरप्रेक्षा से शरीर के भीतर होने वाले संवेदन, स्पंदन, कंपन का अवलोकन प्रेक्षा से किया जाता है। ज्यों-ज्यों प्रेक्षा होती है त्यों त्यों दोष दूर होते जाते हैं।

साधक विकास ने बताया शरीर प्रेक्षा के प्रयोग से मेरा कमर दर्द चला गया। वहीं साधक अमरचंद ने बताया कि मैंने शरीर से चेतना की भिन्नता का अनुभव किया। सभी साधकों ने तनाव मुक्ति एवं शरीर के हलकेपन का अनुभव किया।

शरीर प्रेक्षा का प्रयोग करवाते हुए प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किशनलाल ने आगे कहा-प्रेक्षा का एक प्रयोग है प्रेक्षा चिकित्सा जिसके बिना औषध के केवल ध्यान, आसन, प्राणायाम, कायोत्सर्ग से समस्याओं का समाधान होता है।

पच्चीस बोल प्रतियोगिता 16 को

तेरापंथ महिला मण्डल के तत्वावधान व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा के सान्निध्य में कस्बे के थान-सुथान में कल 16 फरवरी को दोपहर 2.30 बजे पच्चीस बोल की लिखित प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। प्रतियोगिता में क्षेत्र की तेरापंथ समाज की महिलाएं एवं कन्याएं भाग ले सकेगी।